

बदले की आग-9

“कुसुम रो पड़ी। गीता ने आगे बढ़कर उसके आंसू पोंछे और बोली- जब खुद की चुदती है तो आँसू आते ही हैं, और जब दूसरे की चुदती है तो मज़ा...

[Continue Reading] ...”

Story By: उषा मस्तानी (mastaniusha)

Posted: Friday, March 7th, 2014

Categories: [लड़कियों की गांड चुदाई](#)

Online version: [बदले की आग-9](#)

बदले की आग-9

कुसुम रो पड़ी। गीता ने आगे बढ़कर उसके आंसू पोंछे और बोली- जब खुद की चुदती है तो आँसू आते ही हैं, और जब दूसरे की चुदती है तो मज़ा आता है। एक दिन की बात है, मुन्नी और मैं तो चुद ही चुकी हैं, अब तेरी बारी है थोड़ा मज़ा लेंगे, उसके बाद हम तीनों दुबारा दोस्त हो जाएँगे।

कुसुम सर झुकाकर बोली- मैं चुदने को तैयार हूँ।

मुन्नी आगे बढ़कर बोली- तुझे तो तैयार होना ही पड़ेगा। राकेश भैया कल इसकी चुदाई का मुजरा कराते हैं। जब आपका लण्ड इसकी गांड फाड़ेगा तब इसे मज़ा आएगा।

गीता चोर आँखों से मुझे देख कर मुस्करा रही थी।

अगले दिन कुसुम मुन्नी और गीता के साथ फ्लैट में गई। पीछे पीछे मैं और मोहन भी आ गए हमने अंदर घुसते ही कपड़े उतार कर लुंगी पहन ली।

दूसरे कमरे में भाभी और मुन्नी ने अपनी साड़ी उतार ली और कुसुम की साड़ी भी उतरवा दी।

भाभी कुसुम के पेटीकोट का नाड़ा खींचकर बोली- कुसुम प्यारी, हमारी तुम्हारे कपड़ों से कोई दुश्मनी नहीं है, इन्हें उतार दो न।

तभी मैं और मोहन भी उस कमरे में आ गए। मोहन को देखकर कुसुम ने नीचे सरकते हुए पेटीकोट को पकड़ लिया, वो शरमा रही थी। कुसुम बोली- मुझे मोहन भैया से शर्म आ रही है।

मुन्नी बोली- इतनी शर्म आ रही है तो मोहन भैया से ही तुझे नंगी करा देते हैं। बेचारे सीधे साधे भैया जी को तूने थप्पड़ मारा था। उस दिन तू जब पैसे चुरा कर भाग रही थी तब तूने राखी की साड़ी पहने हुई थी ताकि दूर से तुझे कोई पहचान नहीं पाए। राखी से ये मजाक करते रहते हैं, इन्होंने राखी के धोखे में तेरे चूतड़ों पर हाथ फेर दिया और तूने इनको थप्पड़ मार दिया। आज तेरे थप्पड़ का बदला ये प्यार से तेरे चूतड़ों में अपना लण्ड डालकर देंगे।

मुन्नी मोहन को आँख मारते हुए बोली- जेठ जी, देवरानी जी को नंगी करिए ना !ऐसा शुभ दिन रोज़ रोज़ कहाँ आता है।

मोहन आगे बढ़ा और उसने गीता का हाथ पेटीकोट से हटा दिया, पेटीकोट सरसराता हुआ नीचे गिर गया, कुसुम के चूत प्रदेश का एक सुंदर नज़ारा हम सभी ने देखा।

कुसुम ने शर्म से अपनी टांगें आपस में मिला लीं।

गीता मुँह बनाते हुए बोली- राकेश भैया, आप जाकर इसे पूरी नंगी करो, इनके बस का नहीं है, देखो कुतिया ने कैसे चूत को टांगों में छुपा कर रखा हुआ है जैसे कोई पतिव्रता औरत नंगी हो रही हो। इसने कम से कम दस लण्ड खा रखे हैं, पूरी रंडी है, इसकी चाल देखकर कोई भी औरत बता देगी।

मैं कुसुम के पीछे पहुँच गया। मोहन साइड में हट गए।

कुसुम के ब्लाउज के कप ऊपर उठा कर उसकी दोनों चूचियाँ बाहर निकाल दीं और उनको दबाते हुए कान में फुसफुसाया- अब बकरी बन गई हो तो थोड़ी बेशर्म हो जाओ और सबको मज़े दो और खुद भी लो !सब अंदर के लोग ही हैं।

मैंने उसकी चूत पर एक हाथ ले जाकर उसकी टांगें चौड़ी की और चूत में उंगली घुसा दी।

मुन्नी बोली- यह हुई न बात ! क्या फूली हुई चूत है !

गीता अपनी मैक्सी के ऊपर से चूत रगड़ते हुए बोली- जरा इसका पिछवाड़ा भी तो दिखा दो ।

अब उसका ब्लाउज उतारते हुए कुसुम को अपनी तरफ सीधा किया और अपने से चिपका लिया उसके नंगे पिछवाड़े का मज़ा तीनों लोग ले रहे थे ।

मैंने मोहन को आँख मारी तो मोहन ने कुसुम के पिछवाड़े पर हाथ फेरते हुए गांड में उंगली करी और होंट काटते हुए कहा- आह, क्या मस्त गांड है, चोदने में मज़ा आ जाएगा ।

कुसुम अब पूरी नंगी थी । मोहन और मेरे लण्ड लुंगी मैं गर्म हो चुके थे और कुसुम के नंगे छेदों में घुसने के लिए तड़प रहे थे ।

मुन्नी ने कुसुम के चूतड़ों को सहलाते हुए कहा- अब प्यार से मोहन जी का लण्ड निकाल कर एक रंडी की तरह सहलाओ और अपनी चूत में डलवाओ ।

मोहन के पास आकर कुसुम ने उनकी लुंगी खोल दी मोहन का लम्बा टनाटन लण्ड बाहर निकल आया ।

कुसुम मोहन का लण्ड धीरे धीरे सहलाने लगी, मोहन कुसुम की चूचियाँ दबाने लगा, मुन्नी मुस्कराती हुई बोली- इस कुतिया को लोड़े पर बैठा लो आज ! गीता भाभी की तरफ से पूरी छूट है ।

गीता बोली- मोहन, इसे अपने लण्ड पर बैठाओ, जब तुम्हारा लण्ड इसकी चूत में घुसेगा तब मेरे कलेजे को कितनी ठंडक पहुंचेगी, मुझे ही यह बात पता है ।

मोहन जमीन पर दीवार के सहारे अपना टनकता लण्ड हाथ में पकड़े गद्दे पर बैठ गया,

कुसुम को मुन्नी हाथ पकड़ कर खींच कर लाई और उसके दोनों नंगे चूतड़ों पर दो दो पटाख पटाख चांटे धरते हुए कहा- रानी, हमें तेरी चूत में लण्ड घुसते हुए देखना है, चुपचाप मोहन जी के लण्ड पर अपनी चूत टिका दे।

मोहन ने कुसुम की जांघें चौड़ी करवा दी और इस तरह से उसकी कमर को पकड़ा कि लण्ड का सुपारा उसकी चूत पर छुलने लगा।

सामने भाभी और मुन्नी उसकी चूत में लौड़ा घुसने का इंतज़ार करने लगीं।

मोहन ने एक जोर का झटका मारते हुए लोड़ा उसकी चूत में घुसा दिया और अब वो मोहन के लण्ड पर बैठी हुई थी।

मोहन ने उसकी कमर पकड़ कर उसे ऊपर नीचे करते हुए चोदना शुरू कर दिया था।

दोनों औरतें उसकी चूत में लोड़ा पिलता देख कर खुश हो रहीं थीं।

कुसुम के छोटे छोटे चूचे ऊपर नीचे होते हुए हिल रहे थे।

उसकी चूत में लण्ड अंदर-बाहर होते हुए बाहर से साफ़ दिख रहा था।

दोनों औरतें कुसुम की लुटती जवानी का मज़ा ले रही थीं।

मोहन ने कुसुम को उठा कर उसे लेटा दिया था और उसकी चूत की कमांड अपने हाथों में लेते हुए उसकी जांघें उठाकर उसकी चूत चोदनी शुरू कर दी, कुसुम उह... आ:... उह... उई... उऊ... करने लगी।

कुछ देर बाद मोहन ने लण्ड निकाल कर अपने वीर्य की बारिश कुसुम के ऊपर कर दी। कुसुम ने शर्म से आँखें बंद कर ली थीं।

भाभी ने आँख मारी और बोली- यह शरमा बहुत रही है, इसकी घोड़ी चुदाई करवाते हैं और

इसके मुँह और चूत में साथ साथ लण्ड डलवाते हैं ।

कुसुम हाथ जोड़ते हुए बोली- मुझे शर्म आ रही है, प्लीज दीदी, मुझे छोड़ दो ! अकेले में आप जिससे कहोगी उससे चुद लूँगी ।

मुन्नी बोली- आह, अब पता चला न जब खुले में चुदती है तब कैसा लगता है । चल अब तुझे दूसरे कमरे में चुदवाती हूँ ।

दूसरे कमरे में गद्देदार सोफा पड़ा हुआ था, उस पर मोहन टांगें फैलाकर बैठ गया ।

कुसुम को मुन्नी ने घोड़ी बना दिया और उसका मुँह मोहन की जाँघों के बीच रखा दिया ।

कुसुम ने आगे बढ़कर मुन्नी के इशारे पर मोहन का झड़ा हुआ लण्ड मुँह में ले लिया और चूसने लगी ।

मोहन भैया लण्ड चुसवाते हुए कभी धीरे धीरे से उसके चूतड़ सहलाते और कभी उन पर चांटे मार देते ।

आज कुसुम उनका निजी माल जो बनी हुई थी ।

गीता और मुन्नी यह देखकर अपनी मैक्सी ऊपर उठाकर चूत में उंगली कर रही थीं ।

गीता ने उसके नर्म नर्म गुदाज़ चूतड़ों की तरफ देखते हुए धीरे से मेरे कान में कहा- चूतड़ तो कुतिया के बड़े मस्त हैं ! उस दिन मेरी घोड़ी चुदाई देखकर बहुत खुश हो रही थी और मेरी गांड में मोमबत्ती घुसाई थी हरमिन ने, आज तुम्हारा लण्ड डलवाती हूँ इसकी गांड में ! दो दो लण्डों से चुदेगी, तब पता चलेगा कुतिया को कि गीता की चुदाई देखने का मज़ा क्या होता है ।

मुन्नी ने गीता की आवाज़ सुन ली थी, बोली- राकेश भैया, देर क्यों कर रहे हैं, जाकर

इसकी गांड चोदिये ना, मेरी चुदाई का बदला तो तभी पूरा होगा जब इसकी गांड चुदेगी और आपके टट्टे इसके चूतड़ों पर तबला बजाएंगे।

मैंने आगे बढ़कर कुसुम की गांड के मुँह पर अपना लण्ड रख दिया और एक चुटकी उसकी कमर पर ली, यह एक इशारा था जिसका मतलब था गांड चुदवाते हुए कुसुम को जोर जोर से ऐसे चीखना है जैसे कि कुंवारी लड़की की गांड खोली जा रही है।

कुसुम ने मोहन का लण्ड मुँह से बाहर निकाल दिया और बोली- ऊई, यह क्या कर रहे हैं, मर जाऊँगी मैं।

मैंने उसके चूचियाँ हाथ में पकड़ी और लण्ड अंदर पेल दिया। कुसुम चीखने का नाटक करने लगी- आह... ऊहूह... मर गई... मर गई...

मुन्नी यही सुनना चाह रही थी। यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

‘दीदी छुड़वाओ... ऊई... दर्द हो रहा है... ऊऊ... ऊ... मर गई...’

मुन्नी ताली बजाते हुए बोली- आह, अब आया न असली मज़ा !

थोड़ी देर में पूरा लण्ड मैंने कुसुम की गांड में घुसा दिया मोहन और मैं उसकी कमर पकड़े हुए थे।

उसकी गांड अब मैं दनादन पेल रहा था मेरे टट्टे उसके चूतड़ों से टकरा रहे थे और तबला बजा रहे थे।

कुसुम चीखें मार रही थी, उत्तेजना में गीता और मुन्नी ने अपनी मैक्सी उतार दी थीं, दोनों एक दूसरे की चूत में उंगली करते हुए कुसुम की गांड चुदाई के मज़े ले रही थीं।

कुछ देर बाद मैंने अपना पूरा वीर्य उसकी गांड में छोड़ दिया ।

इसके बाद मैंने और मोहन ने सोफे पर बैठकर कुसुम को अपनी गोद में लेटा लिया और मोहन ने अपना लण्ड उसके मुँह में दुबारा लगा दिया और उसे चुसवाने लगे, कुछ देर बाद मोहन भैया का ढेर सारा वीर्य कुसुम के मुँह में भर गया ।

अब मुन्नी एक चुदी हुई औरत की तरह हम दोनों की गोद में टांगें फेला कर सीधी लेट गई ।

मुन्नी कुसुम के गालों पर पप्पी लेते हुए बोली- अब हम लोग चाय पीते हैं, उसके बाद दूसरी पारी होगी । पहली में तो तूने खूब मज़े लिए हैं । जान कर एसे चिल्ला रही थी जैसे तेरी कुंवारी गांड चुद रही हो । मेरी भी गांड चुदी हुई है और जिसकी चुदी होती है उसे पता होता है पहली गांड चुदाई का दर्द क्या होता है ।

गीता बोली- इसे तो 3-3 लण्डों से पिलवाना पड़ेगा, तब सुधरेगी यह ।

उसके बाद हम सब नंगे होकर प्रेम से चाय पीने लगे । मैंने मुन्नी के गले में हाथ डालते हुए कुसुम की तरफ देखते हुए कहा- मुन्नी, तुम्हें एक वादा करना होगा !

मुन्नी बोली- राकेश, तुमने मुझ पर इतने अहसान किये हैं, तुम कहोगे तो मैं तुम्हारा मूत भी खुशी खुशी पी लूँगी ।

मैं बोला- आज की सजा के बाद तुम कुसुम से वैसा ही प्यार करोगी जैसा पहले करती थीं ।

मुन्नी बोली- ठीक है, लेकिन आज के बदले के बाद !

कुसुम रोते हुए बोली- दीदी, सच मेरे कारण गीता भाभी और आपको बहुत सहना पड़ा, आप मेरी 3-3 से नहीं 4-4 लण्डों से मेरी चूत चुदवाओ पर आप मुझसे प्यार करना मत

छोड़ना और मेरे गाँव में कुछ नहीं कहना ! आगे से मैं कभी आपको धोखा नहीं दूंगी ।

चाय पीने के बाद आधा घंटा हम सब ने आराम किया ।

कहानी जारी रहेगी ।

mastaniusha@gmail.com

